B. A. Part - I

Paper - I

Micro Economics

(1)

Topic:- लागत और आय या राजस्व की धारणाएँ (Concepts of Cost and Revenue)

⇒ Revenue

औसत आय सीमान्त आय की रेखाओं की प्रकृति (Nature of Average and Marginal Revenue Curve)

पूर्ण प्रतियोगिता (Perfect competition) की स्थिति में फर्म की औसत आय (Average Revenue अथवा AR) तथा सीमान्त आय (Marginal Revenue or MR) दोनों एक दूसरे के बराबर होती है, अतः औसत आय एव सीमान्त आय की रेखाएँ भी एक ही होती है। इसका कारण यह है कि पूर्ण प्रतियोगित की स्थिति में वस्तु का मूल्य दिया हुआ होता है यानि पूरे बाजार में वस्तु का एक ही मूल्य होता है। दूसरे शब्दों में, पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत वस्तु की प्रत्येक इकाई की बिक्री एक ही मूल्य पर की जाती है और चूँकि फर्म को प्रत्येक इकाई कि बिक्री से एक ही मूल्य प्राप्त होता है, अतः औसत आय (Average Revenue)

Scanned by TapScanner

एवं सीमान्त आय (Marginal Revenue) दोनों एक-दूसरे के बराबर होती है। इस प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में औसत आय (Average Revenue) = सीमान्त आय (Marginal Revenue) = मूल्य (Price) अथवा, AR = MR = Price। अब चूँकि पूर्ण प्रतियोगिता में वस्तु की प्रत्येक वस्तु की प्रत्येक इकाई के लिए एक ही मूल्य मिलता है, अतः औसत आय सीमांत आय के बराबर होती है और दोनों रेखाएँ एक ही होती है जो एक क्षैतिज सीधी रेखा (horizontal straight line) का रूप लेती हैं। इसे रेखाचित्र द्वारा निम्न प्रकार दर्शाया जा सकता है।-

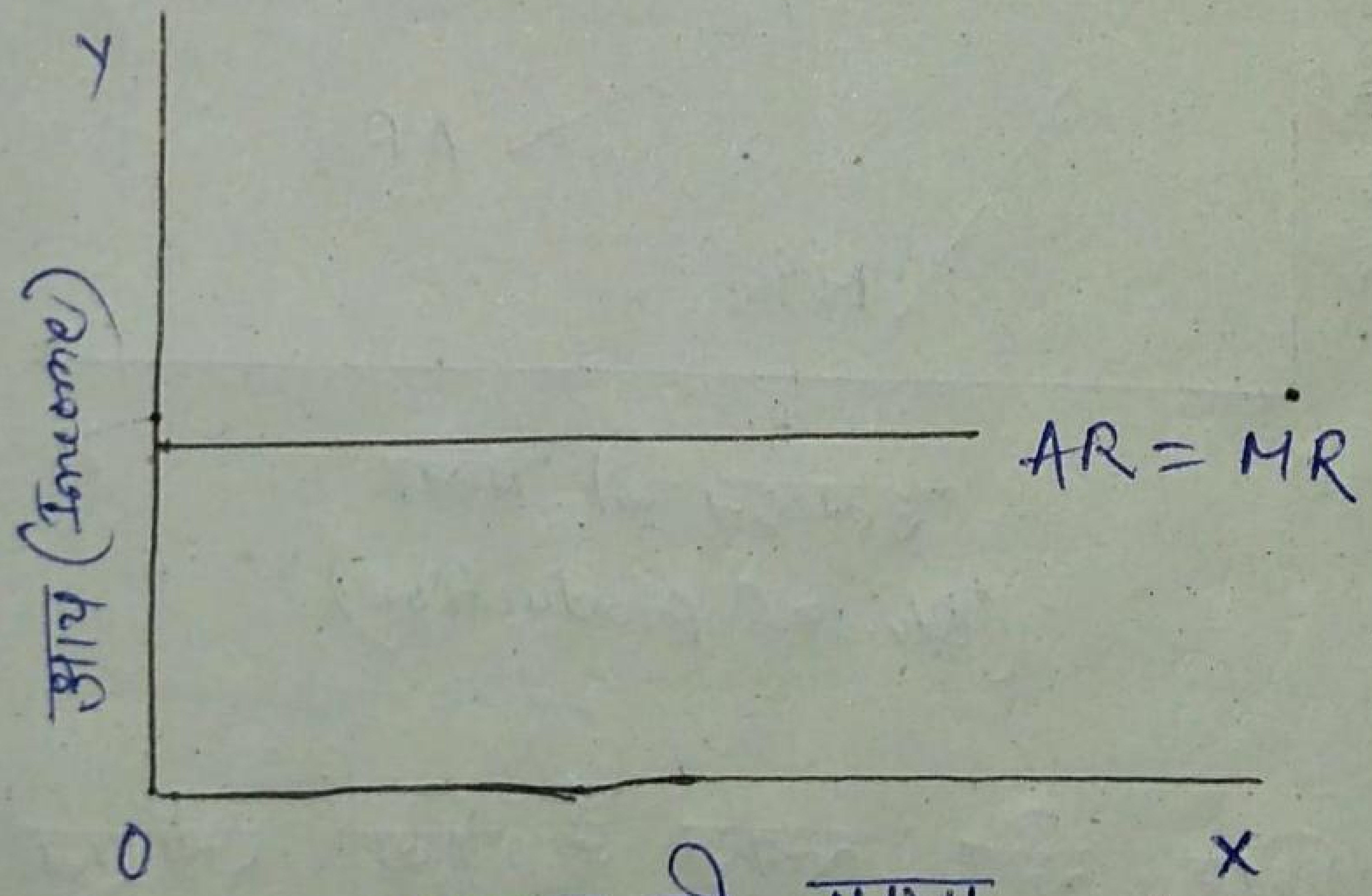

उत्पादन की मात्रा
(Qty. of production)

इस चित्र से स्पष्ट है कि पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में औसत आय तथा सीमान्त आय

की रेखा एक ही है (AR = MR) तथा यह रेखा एक क्षैतिज सीधी रेखा (Horizontal Straight line) का रूप धारण किये हुए है।

लेकिन अपूर्ण प्रतियोगिता, एकाधिकार, द्वैधिकार, अल्पाधिकार एव एकाधिकारी प्रतियोगिता की स्थितियों में औसत आय एवं सीमान्त आय की रेखाएँ नीचे की ओर गिरती हुई (Downward) होती है। इन्हे निम्नांकित चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है —

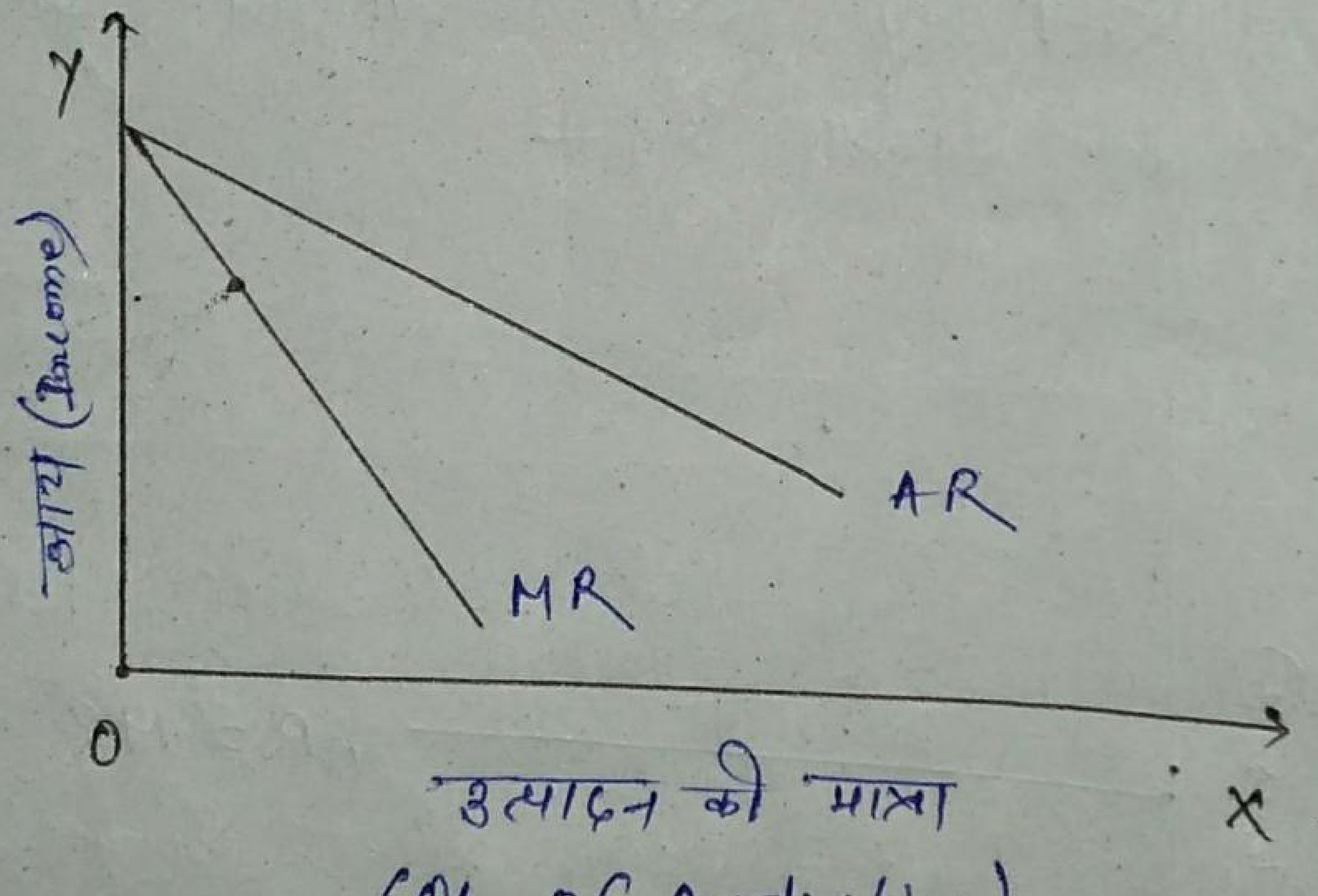

उत्पादन की मात्रा
(Qty. of Production)

इस चित्र से स्पष्ट है कि औसत आय की रेखा (AR) तथा सीमान्त आय की रेखा (MR) दोनो नीचे की ओर गिरती हुई (Downward) है, लेकिन औसत आय की रेखा (AR) की अपेक्षा सीमान्त आय की रेखा (MR) अधिक तेजी

से गिरती है। गिरती हुई औसत आय की रेखा का मतलब यह है कि अपूर्ण प्रतियोगिता अथवा एकाधिकार की स्थिति में कोई फर्म पहले की अपेक्षा अधिक इकाईयों की बिक्री कम मूल्य पर ही कर सकता है। पुनः जब कोई फर्म अपनी बिक्री में वृद्धि के लिए मूल्य में कमी करता है मूल्य में यह कमी केवल अतिरिक्त इकाई पर ही नहीं वरन पहले की सभी इकाईयों पर होती है। इस प्रकार मूल्य की कमी सीमान्त इकाई पर तो वही रहता है लेकिन पिछली इकाईयों पर बँट जाती है। यही कारण है कि औसत आय की अपेक्षा सीमान्त आय मे अधिक तेजी से कमी होती है।

यहाँ स्मरणीय है कि औसत आय की रेखा (AR curve) को माँग की रेखा (Demand curve) भी कहते है। माँग की रेखा के समान औसत आय की रेखा भी मांगी जाने वाली मात्रा एवं मूल्य के बीच के संबंध को व्यक्त करती है। क्रेता किसी वस्तु के लिए जो मूल्य देता है वह फर्म की दृष्टि से औसत आय (Average Revenue) है। फर्म की औसत आय की रेखा (AR curve) यह बतलाती है कि विभिन्न मूल्य पर फर्म की वस्तु की कितनी माँग की जाएगी अथवा वस्तुओं की विभिन्न मात्राओं की बिक्री पर

फर्म को कितनी कीमत या औसत आय (Average revenue) प्राप्त होगी। इसलिए फर्म की औसत आय की रेखा को 'माँग की रेखा' भी कहते हैं। औसत आय की रेखा को बिक्री रेखा भी कहा जाता है क्योंकि यह रेखा विभिन्न मूल्य पर फर्म द्वारा उत्पादित अथवा बिक्री की गई वस्तु की मात्रा को प्रदर्शित करती है।

Munmun Choudhary
Asst. prof.
Department of Economics,
A. S. College Bikramganj.

Scanned by TapScanner